ACKNOWLEDGEMENT

अभिस्वीकृति

मनुष्य आदिकाल से ही जिज्ञासु प्रवृत्ति का रहा है, उसके इसी प्रश्नाकूल वृत्ति ने उसे खोजी बनाया और शोध प्रक्रिया का जन्म हुआ। शोध में शोधार्थी के द्वारा विषय के बारे में उपस्थित तथ्यों का अन्वेषण कर यथासंभव सामग्री एकत्रित कर सूक्ष्मता से उनका विवेचन-विश्लेषण कर नवीन सिद्धियों को उद्घाटित करना होता है। इस प्रक्रिया के दौरान शोधार्थी को विभिन्न पुस्तकालयों, विषय से संबंधित विद्वतजनों, कार्यालयों, शोधर्थी मित्रों आदि की सहयोग की आवश्यकता पड़ती है। अतः इसी प्रक्रिया में सहयोग के लिए मैं सभी के प्रति हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

प्रस्तुत शोध कार्य के कार्यालय सहयोग के अंतर्गत विद्यासागर विश्वविद्यालय के उपकुलपति सुप्रसिद्ध इतिहासविद्य प्रो. रंजन चक्रवर्ती, रजिस्ट्रार प्रो. जयंत किशोर नन्दी, कला एवं वाणिज्य विभाग के डीन प्रो. शिवाजी प्रतिम बासू, सदस्य प्रो. जॅयजीत घोष का मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। प्रस्तुत शोधकार्य की निर्देशिका, विद्यासागर विश्वविद्यालय की भूतपूर्व एवं प्रसीडेंसी विश्वविद्यालय की वर्तमान सहायक प्रध्यापिका, हिंदी की प्रख्यात व्याख्याता, सुप्रसिद्ध कवयित्री डॉ. मुन्नी गुप्ता जी के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ। आपने सतत् प्रेरणा एवं निरंतर प्रोत्साहन के माध्यम से इस शोधकार्य में आई हर कठिनाई में मेरा साथ दिया, इसके लिए मैं हृदय से आपका ऋणी हूँ।

विनित हूँ, श्रद्धेय गुरुवर प्रो. डॉ. विजय कुमार भारती जी (प्रो. एवं डीन, काजी नजरूल विश्वविद्यालय, आसनसोल) के प्रति जिन्होंने मुझे दृष्टि संपन्न बनाया। आभार व्यक्त करता हूँ विद्यासागर विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष प्रो. डॉ. दामोदर मिश्र, डॉ. संजय जायसवाल एवं डॉ. प्रमोद कुमार प्रसाद का जिनका आशीर्वाद और प्रेम निरंतर मेरे साथ रहा। कलकत्ता विश्वविद्यालय के भूतपूर्व प्रो. आदरणीय डॉ. अमरनाथ शर्मा जी एवं वर्द्धवान विश्वविद्यालय के भूतपूर्व प्रो. डॉ. विद्याधर मिश्र जी का एक्सपर्ट के रूप में दिए गए उनके सुझावों के लिए मैं उनको कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

प्रस्तुत शोध कार्य के दौरान मुझे सहयोग करने वाले नेशनल लाइब्रेरी, विद्यासागर विश्वविद्यालय की पुस्तकालय, भारतीय भाषा परिषद, राममंदिर लाइब्रेरी, कुमार सभा लाइब्रेरी, मैत्रेयी ग्रंथागार, राममोहन कॉलेज लाइब्रेरी के सभी सदस्यों के प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूँ।

मैं अपने दिवंगत पिता श्री वसंत रविदास जी का जिनके त्याग, तपस्या और अनुप्रेरणा के बिना मैं कुछ भी नहीं। अगर आज वे होते तो मेरे इस शोधकार्य से निश्चित ही बहुत प्रसन्न होतें। तत्पश्चात् मैं आभार व्यक्त करता हूँ अपनी माँ सोमनी देवी के प्रति जिन्होंने सर्वप्रथम अपनी अंगुली पकड़कर मुझे चलना, बोलना, सिखाया, जो आज भी अपने आशीर्वाद से मुझे हमेशा आगे बढ़ने की प्रेरणा देती रहती हैं।

मेरी सहधर्मीणी रेखा कुमारी के प्रति कृतज्ञ हूँ। शोधकार्य के दौरान कठिनाइयों की चुभन निरंतर मेरे साथ सहती रहीं। शोध के दौरान मेरा बेटा प्रियांशु मेरे अभाव की पीड़ा निरंतर सहता रहा। यह मेरी मजबूरी और उसकी नियति रही। इसके अतिरिक्त मेरे परिवार के अन्य सदस्यों, कुछ सहकर्मी तथा शोधार्थी मित्रों का सहयोग भी मुझे समय-समय पर मिलता रहा, इसके लिए मैं उनका आभार व्यक्त करता हूँ। शोध प्रबंध के टंकण का कार्य आत्मीयता और तत्परता से करने वाले राजेश साव जी के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ। शोधकार्य को संपन्न बनाने और मनोबल बढ़ाने में जिन ज्ञात-अज्ञातों की सहायता तथा शुभकामनाएँ मुझे प्राप्त हुईं, उन सबके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।

Om Prakash Ravidas.

ओम प्रकाश रविदास